श्री स्थानकवासी जैन ग्रन्थमाला पुष्प नं० २

(पूज्य श्री श्री १००८ श्री श्रीलालजी महाराज की स्मृति-स्वरूप)

आलोयणा

(विस्तार सहित)

प्रकाशक—

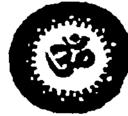
श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था.

बीकानेर (राजपूताना)

वीर संवत् २४५४
विक्रम सं० १९८५

प्रथमावृत्ति २०००

न्योछावर
=)



श्री वीतरागाय नमः

। आलोयणा ।

(विस्तारसहित)

जिनवरपद्-पंकज विमल , प्रणमी मन उल्लास ।
करूँ पाप आलोयणा, कटत विकट भव पास ॥ १ ॥

अतीत काले अठारा पापस्थानक सेविया होय सेवाया होय सेवतां प्रते अनुमोद्या होय इस भवे पर भवे उसकी आलोयणा इस तरह है । प्रथम तो नवकार मंत्र कहना । नवकार मन्त्र इस प्रकार —

" नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं , एसो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥ "

यह नवकार मंत्र कैसा है उसके गुण लिखते हैं – चौदह पूर्व को सार मंत्र नवकार , सरणा को आधार , तरण तारण जिहाज , महामंगलीक , महाजसवंत , महासुभट , महापवित्र , अक्षय अजर पद को दातार , निर्भय ठिकाणा को दातार , सामता सुखां को दातार, मनचिंत्या मनोरथ को दातार, चिन्ता को हरणहार, विघ्न को मेटणहार , हर्ष आनंद को उपजावणहार, जिनशासन को मूल ज्ञान दर्शन चारित्र बीज को दातार, विघ्न को विनासनहार, कलेस को हरणहार , पाप को टालणहार , दुर्गति को नमारनहार , विलास को उपजावणहार , जंत्र में मोटो जंत्र , मंत्र में मोटो मंत्र , तंत्र में मोटो तंत्र , टोटका में मोटो टोटको, औषधि में मोटी औषधी , ऋद्धि में मोटी ऋद्धि, सिद्धि में मोटी सिद्धि , रतन में मोटो रतन, जतन में मोटो जतन , वृक्ष में मोटो कल्पवृक्ष , रिखन में मोटो रिख , निधान में मोटो निधान,

ध्यान में मोटो ध्यान, ज्ञान में मोटो ज्ञान, दर्शन में मोटो दर्शन, दान में मोटो दान, तीर्थ में मोटो तीर्थ, प्राण में मोटो प्राण, सिद्धान्त में मोटो सिद्धान्त, रसायन में मोटो रसायन, रसकुंपिका में मोटी रसकुंपिका, नागदमनी में मोटी नागदमनी, पारस में मोटो पारस, प्रसिद्ध में मोटो प्रसिद्ध, प्रगट में मोटो प्रगट, प्रतीतकारी में मोटो प्रतीत कारी, सेवा में मोटी सेवा, सुमरन में मोटो सुमरन, जस में मोटो जस, विचार में मोटो विचार, हित में मोटो हित, पारगामी में मोटो पारगामी, करनी में मोटी करनी, अर्थ में मोटो अर्थ, भक्ति में मोटी भक्ति, क्षमा में मोटो क्षमा, निराधारां को आधार, मुक्ति मार्ग को पहोंचाड़णहार। इत्यादिक उपमा करी नवकार मंत्र महाकल्याणिक है। यह नवकार मंत्र कह कर पीछे इरियावहीं पडिकमीने पीछे तस्सुत्तरी कह कर पीछे अर्थसहित इरियावही का काउसग करे, पीछे नवकार कहकर लोगस्स उज्जोयगरे प्रगट कहे, पीछे बैठकर पूर्व तथा उत्तर दिसि मुख कर के जीमणो गोड़ो नीचो राख कर बामो गोड़ो ऊंचो रख के कँवल का डोडा की परे दो हाथ जोड़ कर नमोत्थुणं को पाठ भण कर पीछे जघन्य २० तीर्थंकर उत्कृष्टा १६० तथा १७० तीर्थंकर उन में वर्तमान काल जो महाविदेह क्षेत्र के विषे विचरते हैं उन को वंदना नमस्कार कर

के पीछे अनंत सिद्ध भगवान को वंदना नमस्कार करे पीछे अरिहंतों की साक्षी अनंता सिद्ध भगवंत की साक्षी, केवली की साक्षी ऐसी आलोयणा लें उसकी विधि कहते हैं- पहले तो समकित शुद्ध करे उस में देव तो अरिहंत, गुरु श्रीनिर्ग्रन्थ, धर्म श्रीकेवली भगवंत भाषित दयामय श्रद्धे, पदार्थ की सद्दहणा परूपणा उत्तराध्ययन के विषे अट्ठाईसवें अध्ययन में नीचे लिखी गाथाओं (१४, १५, २८, ३१) से जानना। नव तत्त्व —

जीवाजीवा य बंधो य, पुण्णं पावासवो तहा।
संवरो णिज्जरा मोक्खो, संतेए तहिया णव ॥ १४ ॥

तहियाणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं।
भावेण सद्दहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ १५ ॥

परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि।
वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥

निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छं अमूढदिट्ठी य।
उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणा अट्ठ ॥ ३१ ॥

नव पदार्थ जैसा भगवन्त भाष्या वैसा श्रद्धया न हों तस्स मिच्छामि दुक्कडं। अरिहंत सिद्ध केवली भगवन्त के सन्मुख भगवन्तभाषित नव पदार्थ की श्रद्धा करना। अथ सूत्र आचारांग के चौथे समकित अध्ययन में समकित का अधिकार लिखा है उसका उच्चारण सूत्रपाठ से करतेहैं

सेवेमि जे अतीता जे पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहंता भगवंतो ते सव्वेवि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवंति एवं परूवेंति-सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता णहंतव्वा णअज्जावेयव्वा णपरिघेतव्वा णपरितावेयव्वा णकिलामेयव्वा णउद्दवेयव्वा। एस धम्मे सुद्धे णितिए सासए समेच्च लोयं खेयन्नेहिं पवेइए तंजहा-उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु वा उवरयदंडेसु वा अणुवरयदंडेसु वा सोवाहिएसु वा अणोवहिएसु वा संजोगेसु वा असंजोगेसु वा तच्चं चेयं तहा चेयं अस्सिं चेयं पवुच्चइ ॥

वे गृहस्थी जती सारंभी निरारंभी सपरिग्रही निष्परिग्रही को यही उपदेश देना—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हणना नहीं, ऐसे अनन्ता तीर्थंकर भगवान ने कहा है, अभी वर्त्तमान तीर्थंकर भगवंत ऐसे ही कहते हैं, आगामी काले अनंता तीर्थंकर ऐसे ही कहेंगे। यह धर्म ध्रुव नित्य शाश्वत है। सर्व जीवों के खेद के जाणणहार केवली भगवंतने कहा और इसीतरह समकित शुद्ध जानना। यह समकित अनंतकालें अभी भी न श्रद्धी हो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ चार सरणा लिखते हैं—

पहला सरणा श्रीअरिहंत भगवंत का, उत्पन्न विमल केवल ज्ञान से सूर्य की तरह प्रकाश के करणहार, मिथ्यात्वरूप तिमिर अंधकार के हरणहार, समकित व्रत शुद्ध धर्म के देनहार, तीयपडुप्पन्नमणागयजाणए सव्वन्नूणं सव्वदंसी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे तिलोकनिरिक्खए तिलोकवंदिए तिलोकपूइए अणासवे असयले अकम्मंसे संसुद्धनाणदंसणधरे अरिहा जिणे केवली अप्पडिसेही, बारह गुणों सहित अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन अनन्त चारित्र अनन्त वीर्य अनन्त लोचन अनन्त गुणों करी विराजमान भामण्डल श्वेतचामर देवदुन्दुभी स्फटिक सिंहासन अशोक वृक्ष तीन छत्र धर्मचक्र धर्मध्वजा, जघन्यतो सात हाथ उत्कृष्टा पांचसौ धनुष ॥ ९ ॥

देहमान, वज्र ऋषभ नाराच संघयण, समचउरंससंठाण , एक हजारने आठ लक्षण सहित, अनुपम वर्न रस गंध फरस से शोभायमान, चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी कर विराजमान, चौसठ इंद्रों के पूजनीक , अनन्त जीवों के रिक्षपाल , जगतगुरु , जगतलोचन , जगतजीवन भव्य जीवों के आह्लाद हर्ष आनन्द संतोष के उपजावणहार , मोक्षमार्ग के दिखावणहार , अभयदान के देनहार , शरणों के देनहार , संयम जीवितव्य के देनहार , बोधिबीज समकित के देनहार, रागद्वेष के जीपणहार, बारह गुणों सहित, अठारह दोष रहित , (मिथ्यात्व नहीं १ अज्ञान नहीं २ मद नहीं ३ क्रोधनहीं ४ माया नहीं ५ लोभ नहीं ६ रति नहीं ७ अरति नहीं ८ निद्रा नहीं ९ शोक नहीं १० अलीक(मृषा) नहीं ११ अदत्त (चौरी) नहीं १२ मत्सरभावरहित १३ भय नहीं १४ प्राणिवध करे नहीं १५ प्रेम (राग) नहीं १६ क्रीडा नहीं १७ हास्य नहीं १८) एवं अठारह दोष रहित, संसार समुद्र के तारणहार, चार घातिया कर्म क्षय किया, मुक्तिजाने के कामी, ऐसे श्री अरिहंत भगवन्त अतीत काले अनन्ता अरिहन्त भगवन्त हुए अभी वर्त्तमान काले संखयाता अरिहंत भगवन्त पांच महाविदेह क्षेत्र के विषे उद्योत के करणहार गामे गामे एकराय नगरे नगरे पंचराय प्रतिबंध रहित परमात्मा परम पूज्य परमदयालु परम

कृपालु, भव्यजीवों के आधार घणे जीवों को तारते हुए विचरते हैं। ऐसा पहला सरणा श्री अरिहंत भगवंत केवली का पडिवज्जुं हूं ॥ इति प्रथम सरणा संपूर्ण ॥

दूजो सरणो श्री सिद्ध भगवंतजी को वे सिद्ध भगवंतजी कैसे हैं ? इकतीस गुण सहित, वे ३१ गुण ये हैं-पांच ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय करणहार, नवप्रकार दर्शनावरणीय कर्म के क्षय करणहार, दोय भेदे वेदनीय कर्म के क्षय करणहार, दोय भेदे मोहनीय कर्म के क्षय करणहार, चार भेदे आउष्य कर्म के क्षय करणहार, दोय भेदे नाम कर्म के क्षय करण हार, दोय भेदे गोत्रकर्म के क्षय करणहार, पांच भेदे अन्तराय कर्म के क्षय करणहार। और इकतीस अतिशय कर विराजमान। वे अतिशय इस प्रकार —

" न दीहे न हस्से न वट्टे न तंसे न चोरंसे न परिमंडले न किण्हे न नीले न लोहिए न हालिद्दे न सुक्किले न सुरभिगंधे न दुरभिगंधे न तित्ते न कडुए न कसाए न अंबिले न महुरे न कक्खडे न मउए न गरुए न लहुए न सीए न उण्हे न निद्धे न लुक्खे न काऊ न रुहे न संगे न इत्थी न पुरिसे न अन्नहा (नपुंसए) " ॥

चौदह भेदे तथा पन्द्रह प्रकारे सिद्ध हुए हैं। वे सिद्ध भगवन्त कैसे हैं-न रोगी न सोगी न जोगी न भोगी न काई नमाई अनन्तज्ञानी अनन्तदर्शनी अनन्तचारित्री अनन्त क्षायिक समकित के धणी अनन्तवीर्य अनन्त सुख आत्मिक आनन्द प्राप्ति सिद्ध बुद्ध पारंगत परम्परागत अजर अमर अक्षय अव्याबाध अकलङ्की निरंजण निराकार असरणसरण जीवसरूपी एक

१— सिद्धों के चौदह भेद —तीर्थ प्रवर्त्ते उस वक्त एकसौ आठ सिद्ध होवे १। तीर्थ का विच्छेद हुए दश सिद्ध होवे २। तीर्थंकर वीस सिद्ध होवे ३। सामान्य केवली एकसौ आठ सिद्ध होवे ४। स्वयबुद्ध १०८ सिद्ध होवे ५। प्रत्येकबुद्ध ६ सिद्ध होवे ६। बुद्धबोधित १०८ सिद्ध होवे ७। स्वलिङ्ग १०८ सिद्ध होवे ८। अन्यलिङ्ग १० सिद्ध होवे ९। गृहस्थलिङ्ग ४ सिद्ध होवे १०। स्त्रीलिङ्ग २० सिद्ध होवे ११। पुरुषलिङ्ग १०८ सिद्ध होवे १२। नपुंसकलिङ्ग १० सिद्ध होवे १३। सर्व भेले उत्कृष्ट एक समय में १०८ सिद्ध होवे ॥ पूर्वोक्त सब बोल एक समय आसरी (को ले कर) जाणना, एक समय में उत्कृष्ट इतने सिद्ध होते हैं।

२ सिद्धों के पन्द्रह प्रकार — तीर्थ सिद्धा १, अतीर्थ सिद्धा २, तीर्थंकर सिद्धा ३, अतीर्थंकर सिद्धा ४, स्वयबुद्ध सिद्धा ५, प्रत्येकबुद्ध सिद्धा ६, बुद्धबोधित सिद्धा ७, स्त्रीलिङ्ग सिद्धा ८, पुरुषलिङ्ग सिद्धा ९, नपुसक लिङ्ग सिद्धा १०, स्वलिङ्ग सिद्धा ११, अन्यलिङ्ग सिद्धा १२, गृहिलिङ्ग सिद्धा १३, एक सिद्धा १४, अनेक सिद्धा १५।

सिद्ध वहां अनन्त सिद्ध लोक के अग्रभाग सिद्ध क्षेत्र के विषे जाकर तिष्ठया (रह्या) है वे जघन्य अवगाहना एक हाथ आठ अगुंल, मज्झिम चार हाथने सोलह आंगल, उत्कृष्टी तीनसौ तेतीस धनुष ने बत्तीस आंगल क्षेत्र अवगाह कर रहे हैं आठ कर्म रहित आठ गुणां सहित, वे ८ गुण ये हैं —ज्ञानावरणीय कर्म क्षय करने से अनन्त केवल ज्ञान गुण प्रकट हुआ १ दर्शनावरणीय कर्म क्षय करने से अनन्त केवल दर्शन गुण प्रगट हुआ २ वेदनीय कर्म क्षय करने से निराबाध सुख गुण प्रगट हुआ ३ मोहनीय कर्म क्षय करने से अनन्त चारित्र गुण प्रगट हुआ ४ आयुष्य कर्म क्षय करने से अटल अवगाहना गुण प्रगट हुआ ५ नाम कर्म क्षय करने से अमूर्त्त गुण प्रगट हुआ ६ गोत्र कर्म क्षय करने से अगुरुलघु गुण प्रगट हुआ ७ अन्तराय कर्म क्षय करने से अनन्त आत्मिक शक्ति गुण प्रगट हुआ ८। जो सिद्ध भगवन्त जन्म मरण के फेरे टाल के मुक्ति स्थानक जाकर विराजे हैं। अतीत काले अनन्त सिद्ध भगवन्त मोक्ष पहुँचे वर्त्तमान काले संख्याता सिद्ध भगवान मोक्ष जाते हैं सासता सुखां में लयलीन हैं उन सिद्ध भगवान का सरणा पडिवज्जुं हूँ॥ इति दूसरा सरणा संपूर्ण।

तीसरा शरणा श्रीसाधुजी भगवंत का वे साधु भगवान कैसे हैं? जघन्य तो दोय करोड़

केवली उत्कृष्टा नव कोडि केवली भगवन्तजी वे कैसे हैं ? अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन अनन्त चारित्र अनन्त वीर्य अनन्त गुण कर सहित अनन्त क्षायिक समकती यथाख्यात चारित्र के धरणहार जघन्य दोय हजार कोडी साधु उत्कृष्टा नव हजार कोडी साधु। वे साधु महापुरुष गणधर आचार्य उपाध्याय बहुश्रुती द्वादशांग के भणगणहार चौदहपूर्व के पाठी ऋजुमति विपुलमति मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी परमावधिज्ञानी मनःपर्यवज्ञानी इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिया उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपरिट्ठावणियासमिया मनसमिया वयसमिया कायसमिया मणगुत्तिया वयगुत्तिया कायगुत्तिया गुत्ता गुत्तिंदिया गुत्तबंभयारी अकोहा अमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंतपरिनिव्वुडा अणासवा छिन्नगंथा छिन्नसोया जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने विणयसंपन्ने नाणंसंपन्ने दंसणसंपन्ने चारित्तसंपन्ने लज्जासंपन्ने लाघवसंपन्ने ओसंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जियइंदिया जियपरिसहा जीवियासमरणभयविप्पमुक्का अममा अकिंचणा वयप्पहाणे गुणप्पहाणे खंती मुत्ती गुत्ती करणप्पहाणे चरणप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे सच्चप्पहाणे संजमप्पहाणे तवप्पहाणे सोयप्पहाणे बंभ-

पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे नाणवलिया दंसणवलिया चारित्तवलिया मणवलिया वयवलिया कायवलिया आमोसहिपत्ता खेलोसहिपत्ता जल्लोसहिपत्ता विप्पोसहिपत्ता सव्वोसहिपत्ता कोट्ठबुद्धी बीजबुद्धी पयाणुसारी संभिन्नोसहिपत्ता खीरासवा महुआसवा सप्पियासवा अक्खीणमहानिसिया जंघाचारणी विज्जाचारणी आगासगामी वैक्रियलब्धि के धरणहार आहारक लब्धि के धरणहार तेजोलेश्या की लब्धि शीतलेश्या की लब्धि पुलाक की लब्धि इत्यादि लब्धि के धरणहार तपसी मोटा महानुभाव एकावली तप के करणहार मुक्तावली तप के करणहार रत्नावली तप के करणहार कणगावली तप के करणहार खुड्डगसिंहनिक्कीलियतप के

---

१ आमोसहि १ विप्पोसहि , २ खेलोसहि ३ जल्लओसही ४ चेव । सव्वोसहि ५ संभिन्न ६ , ओहि ७ रिउ ८ विउलमइलद्धी ९ ॥ १५०६ ॥ चारण १० आसीविस ११ के – वलिय १२ गणहारिणो १३ य पुव्वधरा १४ । अरहंत १५ चक्कवट्टी १६ , बलदेवा १७ वासुदेवा १८ य ॥ १५०७ ॥ खीरमहुसप्पि आसव १९ , – कोट्ठय बुद्धी २० पयाणुसारी २१ य । तह बीयबुद्धि २२ तेयग २३ , आहारग २४ सीयलेसा २५ य ॥ १५०८ ॥ वेउव्वि देहलद्धी २६ , अक्खीणमहाणसी २७ पुलाया २८ य । परिणामतववसेणं , एमाई हुंति लद्धीओ ॥ १५०९ ॥ (प्रवचनसारोद्धार २७० द्वार) ।

करणहार महासिंहनिक्कीलिय तप के करणहार जवमज्झचंदपडिमा के वहणहार वज्रचन्द्र पडिमा के वहणहार भद्रपडिमा के वहणहार महाभद्रपडिमा के वहणहार सव्वओभद्दपडिमा के करणहार आयंबिलवर्द्धमान तप के करणहार भिक्खु की पडिमा के करणहार इत्यादिक विविध प्रकार के तप के करणहार —

चउत्थभत्तिया छट्टभत्तिया अट्ठमभत्तिया दसमभत्तिया दुवालसभत्तिया चोद्दसभत्तिया सोलसभत्तिया अद्धमासिया एक्कमासिया दुमासिया तिमासिया चउम्मासिया पंचमासिया छम्मासिया उक्खित्तचरिया निक्खित्तचरिया उक्खित्तनिक्खित्तचरिया निक्खित्तउक्खित्तचरिया अंतचरिया पंतचरिया लूहचरिया समुदाणियचरिया संसट्ठचरिया असंसट्ठचरिया दिट्ठलाभिया अदिट्ठलाभिया भिक्खलाभिया अभिक्खलाभिया अंतआहारी पंतआहारी लूहआहारी तुच्छआहारी अरसआहारी विरसआहारी अंतजीवी पंतजीवी लूहजीवी तुच्छजीवी अरसजीवी

विरसजीवी उपसंतजीवी पसंतजीवी आयंबिलिया पुरिमड्ढीया एकासणिया निव्वि-
गइया अमज्जमंसासणिया नपगामरसभोई।

इत्यादि गुण सहित वीर आसण के करण हार सूर्य की आतापना के लेणहार वस्त्ररहित शीत के सहणहार अकंडुया सव्वगायअपडिकम्मा इहलोकपरलोकपडिबंधरहित संसारपार-गामी कम्मनिग्गहणट्ठयाए अब्भुट्ठिया। ऐसे श्रीसाधु महापुरुष मोक्ष मार्ग के साधणहार छ काय के रक्षपाल छकाय के दयालु आप तरे दूजा भवजीवाने तारे सतरा भेदे संयम बारह भेदे तप कर आतमा को भावता विचरे। ऐसा तीसरा सरणा श्रीसाधु भगवंत का पडिवज्जु हूँ। तीसरा सरणा संपूर्ण॥

चोथा सरणा श्रीकेवलिभाषित दयामय धर्म का। वह धर्म कैसा है त्रस थावर सूक्ष्म बादर पर्यासा अपर्यासा पृथिवीकाय अपकाय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चोरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय सर्वलोक के विषे सर्व जीवों की रक्षा करना किसी जीव को विराधना नहीं ऐसा श्रीकेवलिभाषित दयामय धर्म जानना। वह धर्म कैसा है-? कर्मरूप शल्य का कापणहार, सर्वदुःख के टालणहार, मोक्षमार्ग के पहोंचाडणहार, अवितथ सच्चा संदेहरहित और संसार

समुद्र में त्रुडित जीव के द्वीप समान है। वह संसार समुद्र कैसा है? संसार समुद्र में जन्म जरामरण रूप प्रभूतिधन पाणी है संयोगवियोगचितारूपी विचित्र प्रकार के विस्तीर्ण मोटे कल्लोल हैं, वहां तृष्णारूपी मोटी वेल है, अभिमानरूपी फेन है, चारकषायरूपी मोटे पातालकलसे हैं, काम भोग रूपी कादा है, आठ कर्म रूपी आठ मोटे वेलंधर पर्वत हैं, एकसो अडतालीस प्रकृतिरूपी पत्थर हैं, मोहरूपी मच्छ हैं, निर्बल जीवको सबलजीव रूपी मगर गिलते हैं, पांच प्रमादरूप तथा आठमदरूप दुष्ट शराफ(हिंसक) जीव हैं, मरणरूप भय है, अज्ञानरूप अन्धकार है चार गति गमन करने रूप विस्तीर्ण भँवर है, ऐसा संसारसमुद्र तिरना दुष्कर है, उस संसार समुद्रको तिरने के लिए केवलिप्ररूपित धर्म जहाजसमान है तारणसरण है, गतिप्रतिष्ठित जीव के आधारभूत है, जीवादिक नव पदार्थ प्रकाशने में सूर्य समान है, महाकल्याणिक है, महामंगलीक है। धर्म किस को कहते हैं? दुर्गति पडते जीव को धारण करे उस को धर्म कहते हैं। ऐसा धर्म अतीतकाले अनंते अरिहंत भगवंतने कहा वर्त्तमान काले संख्याता अरिहंत भगवंत कहते हैं, यही धर्म आगामी काले अनन्ता अरिहन्त भगवन्त कहेंगे। इसी धर्म को विराध कर अतीत काले अनन्ता जीव संसार-समुद्र में बुडे हैं इसी धर्म को विराधकर वर्त्तमान काले संख्याता जीव

संसार समुद्र में बुडते हैं इसी धर्म को विराधकर आगामी काले अनन्त जीव संसार समुद्र में बुडेंगे। इसी धर्म को आराधकर अतीत काले अनंता जीव संसार समुद्र तिरे हैं इसी धर्म को आराधकर वर्त्तमान काले संख्याता जीव संसार समुद्र तिरते हैं इसी धर्म को आराधकर आगामी काले अनंता जीव संसार समुद्र तिरेंगे। ऐसा चौथा सरणा केवलिभाषित दयामय धर्म का पडिवजुं हूँ, आदरूं हूँ, लेउं हूँ, अहो भगवान ये चारों सरणा अंतकाल लग मुझ को होज्यो। इति चार सरणा संपूर्ण ॥

इन सरणों को गुणने के बाद अपने किये हुए पापों की अरिहंत भगवंत की साखसे आलोयणा करे – सात लाख पृथ्वी काय सात लाख अप् काय सात लाख तेउ काय सात लाख वाउकाय दसलाख प्रत्येक वनस्पति काय चौदह लाख साधारण वनस्पति काय बे लाख बेइन्द्रिय बे लाख तेइंद्रिय बे लाख चउरिन्द्रिय चारलाख नारकी चारलाख तिर्यंच पंचेन्द्रिय चार लाख देवता चौदह लाख मनुष्य की जाति, ये चौरासी लाख जीवजोनी जानना। तथा पृथ्वीकाय की बारह (१२) लाख कुलकोड़ी , अप्काय की सात (७) लाख कुलकोड़ी, तेउकाय की तीन (३) लाख कुलकोड़ी , वाउकाय की सात (७) लाख कुलकोड़ी, वनस्पति काय की अट्ठा-

ईस (२८) लाख कुलकोड़ी, बेइन्द्रिय की सात (७) लाख कुलकोड़ी , तेइन्द्रिय की आठ- (८) लाख कुलकोड़ी, चउरिन्द्रिय की नौ (९) लाख कुलकोड़ी , जलचर की बारह (१२) लाख कुलकोड़ी , थलचर की दश (१०) लाख कुलकोड़ी , खेचर की साढ़ा बारह (१२॥) लाख कुलकोड़ी, उरपर की दश (१०) लाख कुलकोड़ी , भुजपर की नौ (९) लाख कुल- कोड़ी , मनुष्य की बारह (१२) लाख कुलकोड़ी, नारकी की पचीस (२५) लाख कुलकोड़ी, देवता की छाईस (२६) लाख कुलकोड़ी, एवं एक करोड़ साढ़ासत्यानवे लाख (१९७५००००) सर्व संसारिक जीवों की कुलकोड़ी । एवं सर्व कुलकोड़ी के जीव चांपीया होय चूरीया होय असलीया होय मसलीया कूटीया होय पिसीया सेकीया भुंजीया होय पोलिया होय तलिया होय गालिया होय बालिया होय हण्या होय हणाया होय हणते को भला जाण्या होय मन वचन काया करी विराध्या होय अतीतकाले वर्तमान काले अर्थ अनर्थ धर्म अर्थ काम वसि इण भवे परभवे अनेरे अनंते भव ते अरिहंत सिद्ध केवली भगवंत की साख से त्रिविधे२ मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ गाथा —

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥

इस तरह सब जीवों को खमा के अब अठारह पापस्थानक आलोउँ हूँ । वहाँ पहले तो प्राणातिपात याने जीवहिंसा रूपकार उसमें पहले तो पृथ्वीकाय उसके भेद दो एक सूक्ष्म दूसरा बादर । सूक्ष्म के भेद दो पर्याप्ता अपर्याप्ता, सूक्ष्म बादर इन दोमें से सूक्ष्म तो सर्वलोकव्यापी रह्या है और बादर लोक के एकदेश भाग में है। उसके अनेक भेद हैं — काची माटी मुरड़ कांकरा खड़ी गेरु हींगलू हरिनाल हिरमिच वानी लूण भोडल पाषाण लोह तांबो तरवो रूपो सोनो जसद पारो सुरमो मणसिल वज्र हीरा कर्केतनरत्न वैडूर्यरत्न लोहितासरत्न मसारगल्लरत्न हंसगर्भरत्न पुलाकरत्न सौगन्धिकरत्न अंजनरत्न अंजनपुलाकरत्न रजतरत्न जातिरूपरत्न अंकरत्न स्फटिकरत्न रिष्टरत्न चन्द्रकान्तमणि वैडूर्यमणि , इत्यादि पृथ्वीकाय के भेद घणा उन कीहिंसा इस भवे पर भवे अनेरे अनंते भवे करी होय कर्षणी का कर्म करी कूवा बावड़ी तालाव सरोवर द्रह कुंड गढ कोट खाई प्रासाद घर हाट भवन महल महलायत पाटण देहरा उपासरा महजीत मुख्या प्रमुख अर्थे अनर्थे धर्म जाणि कामवसि हिंसा पृथ्वीकाय की कीनी

होय कराइ होय करताने अणुमोदी होय तो अरिहंत सिद्ध केवली भगवानकी साख से मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥

दूसरी अपकाय उस के भेद २ सूक्ष्म और बादर , उस के भेद २ पर्याप्ता और अपर्याप्ता । सूक्ष्म तो सर्वलोकव्यापी है बादर लोक के एकदेश भाग में है उस के अनेक भेद हैं वे ये हैं- सुद्धोदक ओस हेम गड़ा धूँवरि हरितणु शीतल पाणी उष्णपाणी खारो पाणी वारुणी समुद्र का पाणी आसोदक पाणी खीरोदक पाणी घयोदक पाणी इक्खोदक पाणी रसोदक पाणी इत्यादिक पाणी का घणा भेद है उन पाणी की हिंसा की होय न्हाने के लिए धोने के लिए पीने के लिए तथा तीर्थ के पाणी की विराधना की होय पीपल में पाणी नाख्या होय तलाव की पाल फोड़ी होय , सरोवर की पाल फोटी होय सरवर सुकाया होय, कूवा बावडी उलीच्या होय आंगण चौक डागला में पाणी का छिड़काव दिया होय , इत्यादिक आरंभ समारंभ करके हिंसा की होय कराइ होय करते प्रति अनुमोदी होय इस भव परभव अनेरे अनन्त भवे अर्थ अनर्थ धर्म अर्थ कामवश तो अरिहंत सिद्ध केवली भगवन्त की साखसे मन वचन काया करके तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अथ तेउकाय उस के भेद २ सूक्ष्म और बादर उस के भेद २ पर्याप्ता और अपर्याप्ता, सूक्ष्म तो सर्वलोक में व्याप्त है बादर लोक के एकदेश विषे है उस के अनेक भेद हैं – अंगारा मुम्मुरा अवीजाला उल्कापात बीजली प्रमुख अग्नि कर के रूपा का आगर सोना का आगर लोहा का आगर तांबा का आगर जसद का आगर पचाया होय कोलु का अहाव ईंट का अहाव खार कांजी चूना की भट्टी कोयले पाड़ने के लिए, दीवा चराक मसाल पलीते के लिए तथा देवता की मूर्त्ति को धूप देने के लिए तथा रांधने सेकने के लिए भुंजने के लिए दव देने के लिए और अनेरा आरंभ समारंभ करने के लिए, इत्यादिक अग्निकाय की हिंसा की होय कराई होय करता प्रते अनुमोदी होय इसभवे परभवे अनेरे अनन्त भवे अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे हिंसा की होय तो अरिहंत सिद्ध केवली भगवंत की साखसे मनवचनकाया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

चौथी वाउकाय उस के भेद २ सूक्ष्म और बादर, उस के भी दो भेद – पर्याप्ता और अपर्याप्ता। सूक्ष्म तो सर्वलोक में व्याप्त है और बादर लोक के एकदेश भाग में है उसका भेद घणा है – उक्कलिया वाय मंडलिया वाय घनवाय तनवाय गुंजा वाय संवर्त्तक वाय सुद्धवाय, इत्या-

दिक वाउकाय को वींजणे से वस्त्र से पत्र से हाथ से मुख से (उघाडेमुखबोलकर) मोरपीछी से चामर से , इत्यादि से वाउकाय की हिंसा की होय कराइ होय करता प्रतें अणुमोदी होय इसभवे परभवे अनेरे अनंतभवे अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे तो अरिहंत सिद्ध केवली भगवंत की साख से मनवचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अब पाँचवाँ वनस्पति काय उस के भेद २ सूक्ष्म और बादर उस के भेद २ पर्याप्त और अपर्याप्त । सूक्ष्म तो सर्वलोक व्यापी रह्या है बादर लोक के एकदेश भाग में है उस के अनेक भेद हैं तथा दोय भेद हैं— प्रत्येक वनस्पति और साधारण वनस्पति । उस के अनेक भेद हैं— रूक्खा गुच्छा गुम्मा लता वेली पव्वगा तृणा वेली हरिए औषध अनाज जलरुह कुहणा इत्यादिक के मूल कंद खंध साखा पडिशाखा पान फल फूल बीज प्रमुख और नीलण फूलण की जाति अनन्तकाय । अनन्तकाय और साधारण काय इस भवे पर भवे अनेरे अनन्त भवे अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे हिंसा की होय कराई होय करता ने अणुमोदी होय तो अनन्ता अरिहंत सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मनवचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अब छठी त्रसकाय उस के भेद ४- बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय। बेइन्द्रिय का भेद घणा है—लट गिंडोला सीप सावुला अलसिया जोक कोड़ा गजाइ कृमि चरम्या वालो पउंरा प्रमुख। अथ तेइंद्रिय इस का घणा भेद है- चांचड मांकरण जूँ लीख कीड़ी कुंथुवा मंकोड़ा सुलसुली कानखजूरा उद्देही प्रमुख। अब चउरिन्द्रिय उस का घणा भेद है-माखी माछर भमरा भींगाड़ी डांस कीड़ा तीड पतंगिया कणसारी विच्छु प्रमुख। अब पंचेन्द्रिय उस का भेद घणा है-नारकी तिर्यंच जलचर थलचर खेचर उरपर भुजपर सन्नी असन्नी तथा मनुष्य पांच देवकुरु पांच उतरकुरु पांच रम्यक वास ५हरिवास ५हेमवय ५एरणवय छप्पन अन्तर द्वीप पांच भरत पांच एरवत पांच महाविदेह क्षेत्र के सन्नी असन्नी तथा देवता भवणपति वाण-मन्तर ज्योतिषी वेमाणिक, इत्यादिक अनेक प्रकार के त्रस थावर संख्याता असंख्याता अनन्ता जीव चांप्या होय चूर्या होय असल्या होय मसल्या होय कूट्या होय पीस्या होय सेक्या होय भुंज्या होय, इत्यादिक प्रकारे परितापना उपजाई होय दुहव्या होय दुहाव्या होय दुहता ने भला जाण्या होय हण्या होय हणाया होय हणता ने अणुमोद्या होय, इसप्रकार प्राणातिपात सेव्या होय सेवाया होय सेवता प्रते अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस ॥२२॥

आलो० भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साखसे मन वचन काया
॥२३॥ कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

अथ दूसरा पाप मृषावाद आलोउं क्रोधकारी लोभकारी भयकारी हास्यकारी कुतूहलकारी रागकारी द्वेषकारी झूठ बोल्या होय बोलाया होय बोलताने अणुमोद्या होय। तथा कर्कशकारी कठोरकारी पीडाकारी निश्चयकारी छेदकारी भेदकारी सावद्यकारी मुखरी मिश्रभाषा, इत्यादिक भाषा बोल्या होय बुलाया होय बोलताने अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्तकी साखसे तस्स मिच्छामिदुक्कडं।

तीजा पाप अदत्तादान आलोउं- खात्र खण के गांठ छोड के ताला पडकुची कर के पड़ी वस्तु धणी की जाण कर तथा सगासंबंधी व्यापार संबंधी ली होय तथा चोर की ठग की वस्तु ली होय कूडा तोला कूडा मापा किया होय कूडा लेख लिख्या होय सरसी वस्तु में निरसी भेली होय सरसी दिखा कर निरसी दी होय इत्यादिक अदत्त लिया होय लेवाया होय लेता ने भला जाण्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनंत भवे तो अरिहंत सिद्ध केवली भगवंत की साखसे मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ॥२३॥

चौथा पापस्थान मैथुन ते आलोउं, देव मनुष्य तिर्यंच संबन्धी मैथुन सेव्या होइ पर का विवाह नात्रा जोडाया होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनंत भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवंत की साख से मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

पांचवाँ पापस्थान परिग्रह आलोउं– खेत्त वत्थु हिरण्ण सुवण्ण धन धान्य दोपद चोपद कुविय– धातु इत्यादि नव प्रकार का परिग्रह संग्रह किया होय. राख्या होय रखाया होय राखता ने भलो जाण्यो होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवंत की साखसे मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

ऐसे क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पिशुन १४ परपरिवाद १५ रतिअरति १६ मायामोसो १७ इत्यादिक पापस्थानक सेया होय सेवाया होय सेवताने भला जाण्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

अठारहवाँ पापस्थान मिथ्यादंसणशल्य – खोटा देव खोटा गुरु खोटा धर्म ऊपर श्रद्धा

रक्खी होय तथा जिनवचन से ऊणो सरध्यो होय परूप्यो होय तथा धर्म ने अधर्म सरध्यो होय अधर्म ने धर्म सरध्यो होय जीव ने अजीव सरध्यो होय अजीव ने जीव सरध्यो होय असाधु ने साधु सरध्यो होय साधु ने असाधु सरध्यो होय संसार का मार्ग ने मोक्ष को मार्ग सरध्यो होय मोक्ष का मार्ग ने संसार को मार्ग सरध्यो होय कर्मों से अणमुकाणा ने मुकाणा सरध्या होय कर्मों से मुंकाणा ने अणमुंकाणा सरध्या होय। इत्यादिक मिथ्यादंसणशल्य अठारहवाँ पाप-स्थानक सेव्या होय सेवाया होया सेवता ने अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

ईसर महेसर महादेव देवी दिहाडी शीतला चौथ भींजासणे मांडी चंडिका भैरव क्षेत्रपाल जक्ष राक्षस भूत काठ का पीतल का सोना का रूपा का तांबा का चित्राम का पाषाण का गारि का कर के फल फूल पाणी अग्नि धूप दीप केसर चंदन तेल फुलेल सुगन्ध करी अर्च्या पूज्या होय पूजता प्रते अणुमोदणा की होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे

अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तथा जोगी जंगम सेवडा भेषधारी नागा सन्यासी बामण भगत गंगागुरु गयागुरु इत्यादिक को गुरुबुद्धि से वंद्या होय पूज्या होय पूजाया होय पूजता प्रते अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भव परभव अनेरे अनन्त भव ते अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

कूवा बावड़ी सर द्रह तलाव निवाण देहरा उपासरा महजीत मुकरबा तीर्थ धाम पादुका छत्री जात्रा मेड़ी इत्यादिक ठाम ठेकाणा किया होय कराया होय करता प्रते अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के त्रिविधे २ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तथा सचित्त फल फूल पाणी लूण दोपद चौपद अचित्त सोनो रूपो लोह कांसी पीतल जसद तरवो सीसो धन धान्य पाहाण हल फाल लाकडा आसण बासण पाणी अग्नि शस्त्र तेल फुलेल अगर चन्दन केसर इत्यादिक हिंसाकारी दिया होय दिवाया होय देता प्रते अणुमोद्या

होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से त्रिविधे २ मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तथा तीर्थयात्रा मेला खेला नदी नाल खाल सर तालाब कुवा बावड़ी इत्यादिक ठाम ठिकाणा कातीमाहात्म्य माहमाहात्म्य सदाकाल न्हावण धोवण करया होय कराया होय करता प्रते अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भव परभव अनेरे अनन्त भवे मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

जज्ञ होम अग्यारी मसाल चराक दीवा पलीता इत्यादिक आरंभ करया होय कराया होय करता प्रते भलो जाण्यो होय इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

देश विदेश तीर्थयात्रा गमन किया होय कराया होय करता ने अणुमोद्या होय मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

कुदेव कुशास्त्र कुधर्म सेविया होय सेवाया होय सेवता नें अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से त्रिविधे २ मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

तथा रात्रीभोजन – असणं पाणं खाइमं साइमं सचित्त कन्द मूल फल फूल अने पाणी मद्य मांस सहित इत्यादिक अभक्ष्य भोगव्या होय भोगाया होय भोगता ने अणुमोद्या होय इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से त्रिविधे २ मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अथ भवान्तर की आलोयणा कहते हैं – इस भव के पहले अनेरे भव अनन्त नारकी के भव किये हों रत्नप्रभा के जाव तमतमा के भव किये। इस जीव ने अनन्ते तिर्यंच के भव किए वे फिर एकेन्द्रिय के बेइन्द्रिय के तेइन्द्रिय के चउरिन्द्रिय के पंचेन्द्रिय के वे फिर जलचर के थलचर के खेचर के उरपर के भुजपर के। अनन्ते भव देवता के वे फिर परमाधामी के भवणपतियों के वाणमंतरों के जोतिषी के पहले सुधम देवलोक के ईशान देवलोक के जाव नवग्रैवेयक तक अनंत भव किये। मनुष्य के वे फिर कसवीयों के उन के नाम जुदे २ इस प्रकार–काजी का मुल्ला का कीर का कसाई का वागरी का धोरी का भील का खटीक का हलालखोर का वारी का बिलोची का तेली का तंबोली का गंधी का माली का घांची का मोची का गांछा का छींपा का रंगरेज का नीलगर का पनीगर का सीसागर का सिकलीगर का मच्छीगर का पासीगर का घादीगर का

साजीगर का तयगर का कचारा का मणीयारा का लूहार का सोनार का कुंभार का तुंघार का ठंठारा का चोड का सीलवर का चतेरा का खारोल का हाली का करसणी का बागवान का डयोढीवान का दरवान का सारवान का पासवान का चीतीवान का कुत्तीवान का ऊँटवान का कोट वाल का चीडयान का फोजदार का हुजदार का तपदार का खेतदार का किलेदार का गोलादार का तोपदार का गूजर का धाकड़ का जाट का पिंजारा का वणझारा का माडंघी का कोडंघी का कासीद का हलकारा का आगड़ा का जोगडा का डूम का भांड का भाट का भोजग का चारण का कापडी का कलाल का दलाल का फेरागर का कठारा का मजूर का घसीयारा का खोजा का दाई का वेश्या का भगतण का रावलिया का नटवा का खोजर का सागी का रागी का खाती का खराधी का खरसाणी का बिरामण का पतडया जोतसी का गरुडया मिश्र का भट का नागर का नंदवाणा का गुजराती का साहू का सेठ का बजाज का पसारी का सराप का कसेरा का हटवाणया का भडभुंज्या का तमाख्या का वोहोरा का भंडसाली का कोठारी का कोठीवाल का राजा का जुवराजा का पातसाहू का वजीर का अमीर का मुगल का पठाण का सैद का रोहेला का सेख का भटियारा का मुठयारा का लखारा का इत्यादिक आर्य अनार्य भव किये

हों यहां उन भवों के विषे हिंसा की होय वे ठिकाणा। तथा उपगरण के नाम जुदा जुदा वे इसप्रकार – आसण वासण शस्त्र वस्त्र नाम नगर खेड़ा गढ़ कोट सोना रूपा तांबा लोह आदिक के आगर सागर पुर पाटण सराय हाट हवेली खाई खास कूवा बावड़ी तालाब बाग बगीचा रूख बाड़ी चौक चोगान चोहटा बाजार भेला नाव जिहाज घाणा घाणी नील का कोठा कोठी जाल फंद खोड़ा बेड़ी भागमो बन्दीखाना कठींजरा पींजरा आगल भोगल सांकल तरवार कटारी भाला बरछी तीर कबाण नालो बन्दूक बाण दारू गोलो गोली बगतर टोप कुल्हाड़ी फरसी छुरी कतरणी सुई कुसी कुदाली पावडा पावडी ऊखली मूसल जोतणि चरखा चरखी रहट रहटया चरवा कुंडी कड़ाइ कडुछुया जाजम सामयाना गाड़ा गाड़ी रथ बहोली शिबिका सुखपाल इत्यादिक सर्व हिंसाकारी आश्रवकारी किया होय कराया होय करता ने अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनन्त भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के सेव्या होय ममता से इत्यादिक की क्रिया अतीतकाले लागी होय-वर्त्तमानकाले लागती होय तो त्रिविधे २ मन वचन काया कर के तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

कर्मादान पन्द्रह – अंगारा का कसब किया होय १, वणकटी का कसब २, गाड़ा गाड़ी प्रमुख कराइ ने बेचने का कसब ३, ऊँट घोड़ा आदि को भाडे देने आदि का कसब ४, खानि आदिक फुड़ाने का कसब ५, गजदांत का कसब ६ लाख का वणज ७, रस (मदिरा आदि) का वणज ८, विष का वणज ९, केसवाले जीवों का तथा दास दासी का वणज १०, तिल इक्खु का पीलाना ११, बलधादिक को वाधी करना १२, दवाग्नि का देना जंगल गाँव घर आदि में आग लगाना १३, सर तालाव आदि का सुकाना १४, असतीजण का पोषणा आजीविकानिमित्त दुश्चरित्र स्त्रियोंका पोषण करना तथा कुत्ता बिल्ली नौला आदि हिंसक प्राणियों को पालना १५। ये पनरा कर्मादान सेव्या होय सेवाया होय सेवता प्रते अणुमोद्या होय अर्थे अनर्थे धर्म अर्थे काम अर्थे इस भवे परभवे अनेरे अनंत भवे तो अरिहन्त सिद्ध केवली भगवन्त की साख से मन वचन काया कर के त्रिविधे २ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इस भव के पहले नारकी तिर्यंच मनुष्य देवता का जितने भव किये हों उन भवों के विषे जो शरीर छोड़े पुंज रोम नख नसाजाल इत्यादिक पुद्गल पडे हों वे हिंसाकारी ठाम ठिकाणा हों उन शरीरों के हाड चाम केश सींग आसण वासण शस्त्र वस्त्र बने हों स्वाभाविक पुद्गल पडे

हों वे सब मन वचन काया कर के त्रिविधे २ वोसिरामि। जाति १ कुल २ वल ३ रूप ४ लाभ ५ तप ६ सूत्र ७ ईसर ८, ये आठ मद किये हों तथा रिद्धि का गारव रस का गारव साता का गारव, ये तीन गारव किये हों कराये हों करतां प्रते अणुमोद्या होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

मायासल्ल नियाणसल्ल मिथ्यादंसणसल्ल मनदण्ड वचनदण्ड कायदण्ड सेव्या होय सेवाया होय सेवता प्रते अणुमोद्या होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

आठ निमित्त – धातुवाद ज्योतिषशास्त्र वेदांगशास्त्र लक्षणशास्त्र स्वप्नशास्त्र तथा भारत रामायण आदि मिथ्या शास्त्र उपदेश्या होय पापसूत्र की प्ररूपणा की होय कराई होय करता ने अणुमोद्या होय तेतीस आशातना मांहिली आशातना की होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं। ज्ञान दर्शन चारित्र की विराधना की होय कराउ होय करता ने अणुमोद्या होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

मूलगुण उत्तरगुण के विषे अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

संवर सामायिक पोसा में संथारा में तथा संवच्छरी के दिन ऐसी आलोयणा अणुमोदणा करनी श्रीतीर्थंकर देव जीवदयामय धर्म की प्ररूपणा कर के धर्म तीर्थ थाप्या मोक्षमार्ग प्रवर्त्ताया

संवरनिर्जरा वधाया द्वादशांग परूप्या अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन अनन्त चारित्र अनन्त सुखों की खान ऐसी अणुमोदणा करनी। दूसरे पद सिद्ध भगवान चौदहभेदे पन्द्रह प्रकारे सिद्ध हुए आठकर्म रहित आठगुण सहित अनन्त सिद्ध मोक्ष पहुंचे उन की निर्जरारूप अणुमोदणा करनी। इस प्रकार गणधर आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु इन के गुण जुदा २ दिपावे ऐसे अनेक प्रकार उत्तम पुरुषां का गुण दिपावे ऐसी अलोयणा मोक्षार्थी जीव हिरदे धारेगा॥ संपूर्ण॥

अथ श्रावक के तीन मनोरथ लिखते हैं। पहलो मनोरथ समणोपासक ऐसे चिंते कब मैं आरंभ और परिग्रह थोडा और घणा न्हाना और मोटा सचित्त अचित्त मिश्र दुःख का कारण दुर्गति का अधिकारी महा अनर्थकारी महापाप का मूल दुर्गति का साल वैर विरोध का करावणहार काम क्रोध मान माया लोभ का स्वामी, कुलेश्या भूंडा अध्यवसाय का परिणामी अज्ञाणी मच्छरी राग द्वेष का मूल, न्याय कृपा हित शील संतोष का छुडावण हार कुमति कुबुद्धि दालिद्र का देण हार सुमति सुबुद्धि सोभाग का हरणहार तप संजम धन का लूटणहार लोभ क्लेश का वधारण हार जन्म जरा मरण का देण हार माया नियाण मिथ्यात सल्य भरा अनन्त

१ सिद्धों के भेद और प्रकार पृष्ठ ६ (टिप्पनी) में आये हैं।

संसार का वधारण हार मोक्षमार्ग में विघ्न का करण हार कड़ुवा कर्म विपाक फल का देणहार अधोगति विषें बेलि का सींचणहार महारंभ चक्र कर्म बंध मन्द बुद्धि का आदरा हुआ सर्व साधु निर्ग्रन्थ का निंदा हुआ पांच आश्रव का सागर सर्वलोक में नहीं दूसरा मोहपास, इहलोक परलोक सुखरहित अतिदारुण कर्कश अशांति से भरा हुआ सर्व कुवणज कुव्यापार का करावणहार अध्रुव- अनन्त असार अशरण ऐसा आरंभ और परिग्रह मैं भी छोडूंगा भगवानजी ! इति प्रथम मनोरथ संपूर्ण ॥

दूसरा मनोरथ कब मैं दस प्रकार यति धर्मधारी नव वाड सुद्ध ब्रह्मचारी सर्व सावद्य परिहारी सैंतालीस दोष विशुद्ध आहारी बारह भेदे तप कारी सतरा भेदे संजम धारी पांच महाव्रत धारी पांच आचार पांच समिति तीन गुप्ति शुद्ध विहारी महा अभिग्रहधारी अन्त आहारी पंत आहारी लूह आहारी तुच्छ आहारी अरस आहारी विरस आहारी अंतजीवी पंत जीवी लूहजीवी तुच्छजीवी सर्वरसपरित्यागी छकाय का रखपाल छकाय का प्रतिपाल निर्लोभी निर्गन्थी निःस्वादी कुच्छिसपला पंखीतुल्य वायु की तरह प्रतिबन्धरहित सर्वसंगपरित्यागी वीतराग की आज्ञासहित सुद्ध अणगार गुणधारी ऐसा शुद्ध साधु मैं भी बनूँगा भगवन्तजी ! ॥

इति दूसरा मनोरथ संपूण ॥

तीसरा मनोरथ समणोपासक ऐसे चिंते कब मैं सर्व जीव खमा के सर्व पाप अलोय कर पडिकम कर के निन्द कर निशल्य हो के निरतिचार होकर सर्व व्रत संभाल के अठारह पापस्थानक पचख कर के चार आहार छोड़ कर यह शरीर इष्टकारी कंतकारी प्रियकारी मनोगमकारी रतनकरंडिया समान वह भी छेहलें सास ऊसास वोसरा कर समाधि प्राप्ति करता हुआ तीन आराधना आराधता हुआ चार सरणा चार मंगलीक मुख से उचरता हुआ सर्व संसार का पीछा करता हुआ अरिहंत सिद्ध साधु केवलीपरूपित धर्म का ध्यान धरता हुआ शरीर की ममतारहित पादपोपगमन संथारासहित अन्तकाल ऐसा पंडितमरण पांच अतिचार टालता हुआ काल अणवांछता हुआ अंत काल ऐसा पंडितमरण मुझ को होज्यो भगवानजी ! । ये तीन मनोरथ समणोपासक मन वचन काया कर के थिरता सहित चितारे तथा चिंतवे तो महा निर्जरा महापज्जवसाणे भवइ, वे महा निर्जरा मोटा कर्म का क्षय संसार का अन्त करें । तीसरा मनोरथ संपूर्ण ॥

॥ इति आलोयणा संपूर्ण ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

जैन शास्त्र भण्डार (लाइब्रेरी)

बीकानेर (राजपूताना)

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

जैन शास्त्र भण्डार (लाइब्रेरी)

बीकानेर (राजपूताना)

सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर में मुद्रित ता०--१८--७--२८